International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232
Impact Factor: RJIF 5.22
www.hindijournal.com
Volume 3; Issue 5; September 2017; Page No. 35-38

डॉ0 भीमराव अम्बेडकर और आधुनिक दलित कविता

डॉ0 शशिकिरण सिंह
प्रवक्ता, हिन्दी, एन० ए० के० पी० (पी० जी०) कालेज, फर्रूखाबाद, उत्तर प्रदेश, भारत।

प्रस्तावना

दलित मुक्ति आन्दोलन के जन्मदाता बाबा साहब भीमराव अम्बेडकर ने स्वयं दलित जाति में उत्पन्न होकर हिन्दु समाज के अनेक दंश सहे थे। जब वह बाजार में कपड़ा लेने जाते थे तो दुकानदार दूर से ही कपड़ा फेक दिया करता था। जानवरों का मुंडन करने वाला नाई भी उनके बाल काटने में अपने को धर्म भ्रष्ट हो जाने की बात कहता था साथ पढने वाले भी उनका स्पर्श नही करते थे। इस तरह के सामाजिक व्यवहार से उनके मनमे बडी ठेस पहुँचती थी। अतः उन्होने अपने को उच्च शिक्षित किया। शिक्षा के क्षेत्र में अनेक बाधाओं को पार करते हुए वे विदेश भी गये। स्वदेश आकर जब वे नौकरी में ऊँचे पद पर नियुक्त हुए तब भी जातिगत भेदभाव की स्थित का उन्हें सामना करना पडा। उनके दफ्तर का चपरासी दूर से ही उनकी ओर फाइले फेंक दिया करता था। अतः यह अनुमान लगाना आसान है कि जब उन जैसे शिक्षित जैसे और उच्च पदासीन व्यक्ति के साथ समाज का ऐसा रवैया था तो साधारण दलितों की स्थिति कितनी भयावह होगी। डॉ0 अम्बेडकर ने इन स्थितियों से समझौता नही किया और अपने साथ ही पूरे दलित समाज को सम्मान से जीने का अधिकार दिलाने के लिए उन्होने आजीवन संघर्ष किया। डॉ0 अम्बेडकर के इस संघर्ष के लिए मराठी लेखक धनंजयवीर लिखते है – विश्वभूषण डॉ0 अम्बेडकर ने युगों–युगों से अस्पृश्य, अत्यज, अतिशूद्र कहलाने वाले समाज में आत्म प्रत्यय आत्म तेज, आत्म विश्वास और स्वाभिमान एवं इन्शानियत की नई चेतना का निर्माण किया। डॉ0 अम्बेडकर जी का उदय आधुनिक भारत के इतिहास में एक तेजस्वी और शाश्वत मूल्यों के दर्शन की महान घटना है।

आधुनिक दलित काव्य में दलित विमर्श की जड़े डॉ0 अम्बेडकर के दर्शन से गहरी जुड़ी है साथ ही दलित मुक्ति की पृष्ठ भूमि ज्योतिबा फुल और अम्बेडकर के जीवन दर्शन पर आधारित है। दलित मुक्ति का दर्शन मानव मुक्ति का दर्शन है। अपने विस्तृत अध्ययन और मनन के पश्चात् अम्बेडकर इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि दलित का उध्दार दलित ही कर सकते है। और इसके लिए उन्हें मिलजुलकर संघर्ष करना होगा। डा अम्बेडकर ने मणगॉव तथा नागपुर में दलित अधिवेशन कार दलितों में जागृति उत्पन्न करने का प्रयास किया। ओमप्रकाश बाल्मीकि के अनुसार डॉ0 अम्बेडकर का दर्शन ही दलितों में अस्मिता, पहचान की ललक पैदा कर सका है। अम्बेडकर का दर्शन मानवीय संवेदनाओं, समता मूलक समाज की स्थापना, स्वतन्त्रता का अधिकार पारस्परिक बंधुत्व भाव उत्पन्न करने वाला और वर्णव्यवस्था से मुक्त होकर जीवन जीने के सरोकारों का दर्शन है। इसी विचार से प्रेरणा लेकर दलित अपनी पहचान तलाशना चाहता है। जीवन की इस जद्दो जहद ने दलित अभिव्यक्ति को सामाजिक उत्तरदायित्व से जोडा है। यह एक मुक्ति संघर्ष है।

स्वतंत्रता के पश्चात भी भारतीय समाज में दलितों की स्थिति में कोई महत्वपूर्ण परिवर्तन नहीं हुआ। संविधान में यद्यपि सभी भारतीय नागरिकों को घर्म, भाषा, जाति और लिंग से परे समान नागरिक अधिकार प्रदान किये गये थे। परन्तु व्यवहार में अभी भी अस्पृश्यता का पूर्ण रूप से उन्मूलन नहीं हो सका। दलितों को उसी तरह अन्याय और अत्याचार सहने पड रहे थे, जैसे स्वाधीनता से पूर्व सहने पडे थे। वे तथाकथित उच्चवर्ण के लोगों के साथ रहने, खाने पीने, समानता का व्यवहार पाने से वंचित थे। देश की स्वतंत्रता उनके लिए अर्थहीन थी। डॉ0 अम्बेडकर ने पूर्ववर्ती दलित कवि हीराडोम की यह कविता देखिए–

''हमनी के रात दिन दुखवा सहत बानी
हमनी के साहेब से मिनती सुनाइबी।
''हमनी के दुख भगवनवा न देखता जे,
हमनी के कबले कलेसवा उठाइवी।
''पादरी साहेब के कचहरी में जाइबजा,
बेधरम होके रंगरेज बन जाइबी।
''हाय राम धरम न छोड़त बनत बा जे,
बेधरम होके कैसे मुहवा देखाइवि।

यह वही धर्म है जिसके कारण दलितों को आजीवन शोषण और दमन की चक्की में पिसना पड़ता है। जी तोड़ परिश्रम करने के बाद भी भरपेट भोजन को तरसना पडता है। सबकी दुत्कार सहनी पडती है। फिर भी उस धर्म को त्यागकर वह जीवित रहने की कल्पना नहीं कर पा रहा है। हिन्दु धर्म में में रहकर ही डॉ0 अम्बेडकर ने दलितों को मन्दिरों में जाने, उपासना करने का अधिकार दिलाने के लिए संघर्ष किया, किन्तु उन्हें उच्चवर्ण के लोगों का घोर विरोध और प्रताड़ना सहने के बाद भी यह अधिकार नहीं मिला। अन्ततः दुखी होकर उन्होने बौद्व धर्म अपनाने का निर्णय लिया और बडी संख्या में दलितों को लेकर वे बौद्व धर्म में सम्मिलित हो गए।

अपने ही लोगों द्वारा निरन्तर अपमानित और प्रताड़ित दलितों का आक्रोश दलितों द्वारा रचित कविताओं में देखा जा सकता है।

तुमने जी है गुलामी। कीड़े मकोड़े से बदतर जिन्दगी।
छीजती इज्जत। बिखरते सम्मान। लुटती बहन बेटियों की आबरू।
तुमने भोगी है। भोगी है। (सी0बी0भारती)

अंदम गोडवी की यह कविता भी दलितों के जीवन की त्रासदी को शिद्दत से उभारती है–

''आइये, महसूस करिये जिन्दगी के तापको,
मैं चमारों की गली तक ले चलूँगा आपको।
'गांव जिसमें आज पांचाली उधारी जा रही,
या अहिंसा की जहॉ पर नथ उतारी जा रही है।
है तरसते कितने ही मंगल लंगोटी के लिए,
बेचती है जिस्म कृष्णा– आज रोटी के लिए।

दलित कविता शोषण के समस्त प्रकारों के विरूद्व मुट्ठी तानकर खडी दिखाई देती है–

''मेरी पीढ़ी ने अपने सीने पर
खोद दिया है संघर्ष।
जहॉ ऑसुओं का सैलाब नहीं।
विद्रोह की चिन्गारी फूटेगी।
जलती भोपड़ी से उठते धुए में
तनी मुठ्ठियॉ
तुम्हारे तहखानों में नया इतिहास रचेंगी।
(ओम प्रकाश बाल्मीकी– सदियों का संताप।

सदियों तक दमन और शोषण के खूनी पंजे में फॅसी दलित जाति की यह भ्रू भंगिमा
अप्रत्याशित नहीं। अपनी पहचान के लिए वह बैचैन है–

चूल्हा मिट्टी का।
मिट्टी तालाब की।
तालाब ठाकुर का।
भूख रोटी की।
रोटी बाजरे की।
बाजरा खेत का।
खेत ठाकुर का।
बैल ठाकुर का।
हल ठाकुर का।
हलकी मूठ पर हथेली अपनी।
फसल ठाकुर की।
कुॅआ ठाकुर का।
पानी ठाकुर का।
खेत खलिहान ठाकुर का।
गली मुहल्ला ठाकुर का।
फिर अपना क्या ?
गॉव ? शहर ? देश? (सदियों का संताप)

दलित भूखा नंगा होकर भी मानवता से रहित नही हुआ हैं–

वे भूखे हैं, पर आदमी का मांस नहीं खाते
प्यासे हैं पर लहू नहीं पीते।
नंगे हैं पर दूसरे को नंगा नही करते।
उनके सिर छत नही हैं।
पर दूसरे के लिए छत बनाते हैं।
वे भूखे हैं।
(ओमप्रकश वाल्मीकि –वे भूखे हैं)

दलित कविता भारतीय समाज में व्याप्त जातिगत विषमता के विरूद्व क्रान्ति का आह्वान है।
तब तुम क्या करोगे ? कविता जातिगत`के बर्बर स्वरूप को कैसे उभारती हैं देखिए –

यदि तुम्हे। धकेल कर गांव के बाहर कर दिया जाए।
पानी तक न लेने दिया जाए। कुएं से दुतकारा फटकारा जाए।
चिलचिलाती दुपहर में कहा जाए तोड़ने को पत्थर। काम के बदले।
दिया जाए खाने को जूठन।
तब तुम क्या करोगे। यदि तुम्हे। पुस्तकों से दूर रखा जाए।
जाने न दिया जाए विद्या मंदिर की चौखट तक।
ढिबरी की मंद रोशनी में। कालिख पुती दीवारो पर।
तब तुम क्या करोगे ?

डॉ0 श्यौराज सिंह बेचैन के प्रमुख काव्य संग्रह ' कौन हूॅ मैं ' तथा 'नई फसल' में भी दलित सामाज की पीडा और नरक से भी बदतर जीवन स्थितियों का वास्तविक और मार्मिक चित्रण हैं। उनकी कविता जुल्म जारी हैं की पंक्तियॉ देखे –

अब उसके खेत का टुकड़ा कुतरने में लगा हैं भूमिदार।
उसकी बरबादी का। जिम्मेदार पटवारी भी हैं।
वह मजूरी गांव। में देखे या शहर को। हो गया आजाद होरी।
पर जुल्म जारी हैं।
उनकी एक अन्य कविता ढोगे से एक उदाहरण द्रष्टव्य है–
तुम उदार थे। गाय के प्रति। और हम थे। आदमी की।
शक्ल में निरे गाय। हमने दिया। दूध। खाया घास –फूस।
और दी। अपनी संताने इंसानी संताने। इंसानी शक्लो में।
बैल बनने के लिए। मूर्खता के कोल्हू में। जूझने खपने के लिए।
पीढ़ी दर पीढ़ी दर। बैल ही बने थे हमारे पूर्वज हम। और संताने भी।
और तुम। स्वामी अनुदार, स्वार्थी, ढोगी अपार।

दलितो की दुर्दशा का कारण हिन्दू धर्म की जाति व्यवस्था ही रही हैं। इस बात को समझ कर डॉ0 भीमराव अम्बेडकर ने कहा था कि जब तक हिन्दू धर्म रहेगा, तब तक उसकी जाति व्यवस्था भी रहेगी और हिन्दू दलितों को कभी उसके मानवीय अधिकार नहीं प्राप्त हों सकेंगे। यही कारण था कि ऐसे धर्म को अपने अन्तिम समय में छोड़कर उन्होंने बौद्धधर्म की दीक्षा ली थी जो जाति व्यवस्था से मुक्त और समतामूलक दर्शन पर आधारित था। मोहनदास नैमिशराय के कविता संग्रह 'सफदर का बयान' की 'क्रान्ति का हथौड़ा' कविता जाति व्यवस्था की क्रूरता पर प्रहार करती है–

एक ही मनुष्य जाति के होने पर भी। जातिगत सम्बोधन के आधार पर।
कसैले से लगने वाले स्वर। कल तक जो गांव और कस्वों के।
परिवेश में सुनाई पड़तें थे। आज उजालों के प्रतीक महानगरो में भी।
सवर्ण जातियों के प्रति सम्मान सूचक। दलित जातियों के प्रति अपमान सूचक।
शब्दों का प्रयोग। खुलकर होने लगा है।

पर स्वयं दलित जन चुप हैं सरकार चुप हैं। दलितो के लिए अपमान सूचक शब्दो का प्रयोग ही नहीं होता, बल्कि उन्हे अपमानित करने का कोई भी अवसर छोड़ा नहीं होता जाता या यो कहे कि उन्हें अक्सर सरेआम अपमान का शिकार होना पड़ता हैं। उनके जीवन का मूल्य पशुओ से भी गया बीता हैं। दंगो में उन्हे शिकार बनाया जाता हैं।

पत्रों में पढ़ता हूॅ – आए दिन दगें होते हैं,
अर्थात् अब यहॉ महान लोग जन्म नहीं लेते।
बेतार से बूचड़खाने की सूचनाएं सुनता हूॅ,
कितने अछूत कहॉ भून दिए और क्यों ?'' (डॉ0धर्मवीर)

आज का शिक्षित दलित अब चुप नहीं रह सकता। उसके सामने

अस्तित्व का संकट हैं। वह अपनी सामर्थ्य से परिचित हैं–

''तुम्हारे शब्दो की शक्ति हैं मुझ में।
मैं अत्याचारी से टकराऊँगा। नाम पर तुम्हारे ऑच नही आने दूंगा।
मेरा क्या ? मर जाऊंगा, मिट जाऊंगा।
डॉ0 अम्बेडकर ने दलितों की सदियों से चली आ रही मूक पीड़ा को वाणी दी। उन्हें अन्याय और शोषण के विरूद्व संघबध्द किया और सभी दमनकारी ताकतों के खिलाफ संघर्ष करने का मंत्र दिया जिसने दलित चेतना को अन्दर तक झकझोरा।

''अम्बेडकर ने कहा – निज देश की तू शक्ति हैं।
निर्माण कर्त्ता देश का – तू धर्म हैं तू, भक्ति हैं।
पहचान अपनी तू बना, उठ हो निडर।
उठ हो निडर।।''

आठवें और नवे दशव के प्रमुख दलित कवि हैं –डॉ0 मनोज सोनकर, डॉ0 राम शिरोमणि होरिल, डॉ0 सुखवीर सिंह, डॉ0 चन्द्रकुमार वरठे, डॉ0 प्रेमशंकर, डॉ0 दयानन्द बटोली, डॉ0 सोहनपाल सुमनाक्षर, मोहन दास नैमिशराय, जयप्रकाश नवेन्दु, श्री रघुनाथ प्यासा और डॉ0 एन0 सिंह। महिला दलित कवयित्रियों में कुसुम मेघवाल, डॉ0 सुशीला टाकभौरे और कावेरी और सुनीता महेन्द्रा उल्लेखनीय हैं।
इन सभी कवियो नें अपनी कविताओं में सदियों से समाज मे चलती आ रही दलितों के प्रति भेदभाव की नीति और विकास के मार्ग में बाधाऐं उपस्थित करने वाली शक्ति के विरूद्व विद्रोह का स्वर है।
डॉ0 एन0 सिह की पंक्तियों में व्यवस्था के प्रति आक्रोश स्पष्ट हैं–

मेरे हाथ की कुदाल। छाती पर कोई नीवं खोदने से पहले।
कब्र खोदेगी। उस व्यवस्था की। जिसके संविधान में लिखा हैं
तेरा अधिकार सिर्फ कर्म में हैं फल पर तेरा अधिकार नहीं।''

निष्कर्षत

सम्पूर्ण दलित काव्य बाबा साहब के चिन्तन का शब्द प्रतिबिम्ब है– जहां उनके जीवन की पीड़ा और संत्रास, उनकी दमघोंटू परिस्थितियॉ, इन परिस्थितियों से मुक्ति की आकांक्षा और संघर्ष अपनी पूरी शक्ति के साथ प्रकट हुआ है।

संदर्भ ग्रंथ

दलित विमर्श के विविध आयाम – डॉ0 वीरेन्द्र सिंह यादव –पृ0173,284,285,286

मेरा दलित चिंतन –डॉ0 एन0सिह,पृ0 83
दलित साहित्य का सौदर्य शास्त्र – ओम प्रकाश वाल्मीकि, पृ0112
हंस – सं0 राजेन्द्र यादव अंक जनवरी 2001
सदियों का सन्ताप– ओम प्रकाश बाल्मीकि
वे भूखे है– ओम प्रकाश बाल्मीकि

आधुनिक दलित काव्य में दलित विमर्श की जड़े डॉ0 अम्बेडकर के दर्शन से गहरी जुड़ी है साथ ही दलित मुक्ति की पृष्ठ भूमि ज्योतिबा फुल और अम्बेडकर के जीवन दर्शन पर आधारित है। दलित मुक्ति का दर्शन मानव मुक्ति का दर्शन है। अपने विस्तृत अध्ययन और मनन के पश्चात् अम्बेडकर इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि दलित का उध्दार दलित ही कर सकते है। और इसके लिए उन्हें मिलजुलकर संघर्ष करना होगा। डा अम्बेडकर ने मणगॉव तथा नागपुर में दलित अधिवेशन कार दलितों में जागृति उत्पन्न करने का प्रयास किया। ओमप्रकाश बाल्मीकि के अनुसार डॉ0 अम्बेडकर का दर्शन ही दलितों में अस्मिता, पहचान की ललक पैदा कर सका है। अम्बेडकर का दर्शन मानवीय संवेदनाओं, समता मूलक समाज की स्थापना, स्वतन्त्रता का अधिकार पारस्परिक बंधुत्व भाव उत्पन्न करने वाला और वर्णव्यवस्था से मुक्त होकर जीवन जीने के सरोकारों का दर्शन है। इसी विचार से प्रेरणा लेकर दलित अपनी पहचान तलाशना चाहता है। जीवन की इस जद्दो जहद ने दलित अभिव्यक्ति को सामाजिक उत्तरदायित्व से जोडा है। यह एक मुक्ति संघर्ष है।
स्वतंत्रता के पश्चात भी भारतीय समाज में दलितों की स्थिति में कोई महत्वपूर्ण परिवर्तन नहीं हुआ। संविधान में यद्यपि सभी भारतीय नागरिकों को घर्म, भाषा, जाति और लिंग से परे समान नागरिक अधिकार प्रदान किये गये थे। परन्तु व्यवहार में अभी भी अस्पृश्यता का पूर्ण रूप से उन्मूलन नहीं हो सका। दलितों को उसी तरह अन्याय और अत्याचार सहने पड रहे थे, जैसे स्वाधीनता से पूर्व सहने पडे थे। वे तथाकथित उच्चवर्ण के लोगों के साथ रहने, खाने पीने, समानता का व्यवहार पाने से वंचित थे। देश की स्वतंत्रता उनके लिए अर्थहीन थी।
डॉ0 अम्बेडकर ने दलितों की सदियों से चली आ रही मूक पीड़ा को वाणी दी। उन्हें अन्याय और शोषण के विरूद्व संघबध्द किया और सभी दमनकारी ताकतों के खिलाफ संघर्ष करने का मंत्र दिया जिसने दलित चेतना को अन्दर तक झकझोरा।

''अम्बेडकर ने कहा – निज देश की तू शक्ति हैं।
निर्माण कर्त्ता देश का – तू धर्म हैं तू, भक्ति हैं।
पहचान अपनी तू बना, उठ हो निडर।
उठ हो निडर।।''

आठवें और नवे दशव के प्रमुख दलित कवि हैं –डॉ0 मनोज सोनकर, डॉ0 राम शिरोमणि होरिल, डॉ0 सुखवीर सिंह, डॉ0 चन्द्रकुमार वरठे, डॉ0 प्रेमशंकर, डॉ0 दयानन्द बटोली, डॉ0 सोहनपाल सुमनाक्षर, मोहन दास नैमिशराय, जयप्रकाश नवेन्दु, श्री रघुनाथ प्यासा और डॉ0 एन0 सिंह। महिला दलित कवयित्रियों में कुसुम मेघवाल, डॉ0 सुशीला टाकभौरे और कावेरी और सुनीता महेन्द्रा उल्लेखनीय हैं।
इन सभी कवियो नें अपनी कविताओं में सदियों से समाज मे चलती आ रही दलितों के प्रति भेदभाव की नीति और विकास के मार्ग में बाधाऐं उपस्थित करने वाली शक्ति के विरूद्व विद्रोह का स्वर है।
डॉ0 एन0 सिह की पंक्तियों में व्यवस्था के प्रति आक्रोश स्पष्ट हैं–
मेरे हाथ की कुदाल। छाती पर कोई नीवं खोदने से पहले।
कब्र खोदेगी। उस व्यवस्था की। जिसके संविधान में लिखा हैं
तेरा अधिकार सिर्फ कर्म में हैं फल पर तेरा अधिकार नहीं।''
निष्कर्षतः सम्पूर्ण दलित काव्य बाबा साहब के चिन्तन का शब्द प्रतिबिम्ब है– जहां उनके जीवन की पीड़ा और संत्रास, उनकी दमघोंटू परिस्थितियॉ, इन परिस्थितियों से मुक्ति की आकांक्षा और संघर्ष अपनी पूरी शक्ति के साथ प्रकट हुआ है।

संदर्भ ग्रंथ

1. डॉ0 वीरेन्द्र सिंह यादव, दलित विमर्श के विविध आयाम, राधा पब्लिकेशन, नई दिल्ली, 2010, पृ0173, 284, 285, 286।
2. डॉ0 एन0सिह, मेरा दलित चिंतन, कंचन प्रकाशनः नई दिल्ली, 2002, पृ0 83।
3. ओम प्रकाश वाल्मीकि. दलित साहित्य का सौदर्य शास्त्र,

राधाकृष्ण पब्लिकेशन, नई दिल्ली, 2001, पृ0112।
4. सं0 राजेन्द्र यादव, हंस, अंक जनवरी 2001।
5. ओम प्रकाश बाल्मीकि, सदियों का सन्ताप, वस्स बहुत हो चुका, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 1997।
6. डॉ0 धर्मवीर, हीरामन, समता प्रकाशनः दिल्ली, 1987।